IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वैश्वीकरण में गृहव्यवस्था का बदलता स्वरूप

कुमारी संगीता
एम॰ ए॰, पीएच॰ डी॰
गृह विज्ञान
बी॰ आर॰ ए॰ बिहार विश्वविद्यालय,मुजफ्रपफरपुर

सारांश

भारत में गृहविज्ञान का दर्शन यथार्थ में गृहविज्ञान और परिवार का वास्तविक, प्रायोगकि दर्शन ही है। पारिवारिक आवश्यकताओं ने मानव को गृह जैसी आधारीय, सामाजिक संस्था को जन्म दियां इसी संस्था में उसे स्नेह, सहानुभूति, विनम्रता, त्याग और साहस आदि सर्वोत्तम मानवीय गुणों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है। यही संस्था उनके भाग्य निर्माण में सर्वाधिक प्रभावपूर्ण भूमिका अदा करती है। गृहविज्ञान के उद्भव एवं विकास की कहानी को बया करती है। शिक्षा के क्षेत्र में गृहविज्ञान का प्रादुर्भाव वर्तमान शताब्दी की देन है। वैसे तो 1780 ई0 में अमेरिकी वैज्ञानिक काउन्ट रम्फोर्ड थामसन ने रसोइ घर में विज्ञान की सहायता से कार्य सरलीकरण के कई प्रयोग किये गये है परंतु क्रमबद्ध रूप से इस विषय को पढ़ाये जाने की आवश्यकता पर सर्वप्रथम अमेरिकी वैज्ञानिक ई0 बीवर सदी के पूर्वाद्ध में हुआ। वस्तुतः गृहव्यवस्था का आधार परिवार से संबंधित है इसलिए परिवार की कुशलता ओर समय व्यवस्थापन की परिधियों में केंद्रित होता है। वस्तुतः परिवार नही होता तो गृहव्यवस्था ही नहीं होती। अतः परिवारिक श्रृंखलाओं के आधारभूत सिद्धांत पर ही गृहव्यवस्था निर्धारित होता है।

कूट शब्दः *दर्शन, वैज्ञानिक, सहानुभूति, गृहव्यवस्था, व्यावहार*

भूमिका

प्रारम्भ से ही गृहविज्ञान के तत्त्व विद्यमान थे। परन्तु इस तत्वों का ज्ञान विशेष ज्ञान से ही प्राप्त हुआ। जब ज्ञानी मानव का उदय हुआ केवल चालीस हजार वर्ष पूर्व हमारी वर्तमान मानव जातियों में ज्ञानी मानव का जन्म हुआ। यह गृहविज्ञान के उद्भव एवं विकास की कहानी को बया करती है। शिक्षा के क्षेत्र में गृहविज्ञान का प्रादुर्भाव वर्तमान शताब्दी की देन है। वैसे तो 1780 ई0 में अमेरिकी वैज्ञानिक काउन्ट रम्फोर्ड थामसन ने रसोइ घर में विज्ञान की सहायता से कार्य सरलीकरण के कई प्रयोग किये गये है परंतु क्रमबद्ध रूप से इस विषय को पढ़ाये जाने की आवश्यकता पर सर्वप्रथम अमेरिकी वैज्ञानिक ई0 बीवर सदी के पूर्वाद्ध में हुआ। सभ्यता के उषाकाल से आदमी ने रोटी कपड़ा और मकान के लिए संघर्ष करता आ रहा है। वस्तुतः

में आग, चाक, धातु, मुद्रा आदि सभ्यता मूलक तत्वों के जन्म एवं विकास का इतिहास ही मानव सभ्यता का इतिहास है। गृहविज्ञान का उद्भव एवं विकास का इतिहास है। वस्तुतः सभ्यता के क्रमिक विकास से गृहविज्ञान का शाश्वत संबंध रहा होगा। यों कहे भारत में गृहविज्ञान का दर्शन यथार्थ में गृहविज्ञान और परिवार का वास्तविक, प्रायोगकि दर्शन ही है। पारिवारिक आवश्यकताओं ने मानव को गृह जैसी आधारीय, सामाजिक संस्था को जन्म दियां इसी संस्था में उसे स्नेह, सहानुभूति, विनम्रता, त्याग और साहस आदि सर्वोत्तम मानवीय गुणों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है। यही संस्था उनके भाग्य निर्माण में सर्वाधिक प्रभावपूर्ण भूमिका अदा करती है। संपूर्ण गृह–प्रबन्धन वस्तुतः दर्शन पर आधारित है जिससे भारतीय इतिहास में गृहविज्ञान की श्रेष्ठता प्रमाणित होती जा रही है।

प्राचीन काल की अवधारणाओं का गृहविज्ञान की अवधारणा बहुत की महत्वूपर्ण है क्योंकि गृहविज्ञान पुरानी मान्यताओं की दृष्टि पर आधारित है और केन्द्रित भी है। इस विज्ञान की पृष्ठ भूमि जितना पौराणिक है, आज के युग में भी प्रासंगिक है। पूर्व के दस्तावेजों से ज्ञात होता है कि पहले सभी कार्य समय व्यवस्थापन की श्रृंखलाओं से बंधे थे। इसका आधारित सिद्धांत और दृष्टिकोण भी नयापन की नयी श्रृंखलाओं को जन्म दिया। फिर भी आधारभूत ढांचा गृहविज्ञान का आधुनिक प्रतिरूप भी भूतकाल जैसा ही प्रतीत होता है।

प्राचीन मान्यता और विकास की गति भी आज वहीं है, पर बदला–बदला सा नजर आ रहा है लोगों की मानसिकता भी आयात किया हुआ है जो मूल रूप से संस्कृति की देन है। गृहविज्ञान के नाम की सार्थकता और विषय की गहनता का अध्ययन यहाँ शामिल किया जा रहा है। अध्ययन बनाने के आकलन के दृष्टिकोण में सुधार होना आवश्यक है।

एलमर ने अपनी पुस्तक समाज में शास्त्रीय अनुसंधान की परिकल्पना में भी समाज शास्त्रीय परिवार ''अंग्रेजी शब्द'' फैमिली लैटिन भाषा के फेमुलस जिसका अर्थ निकलता हैं यह समूह के रूप मजिसमें माता–पिता, बच्चे नौकर आदि आते है। वस्तुतः गृहव्यवस्था का आधार परिवार से संबंधित है इसलिए परिवार की कुशलता ओर समय व्यवस्थापन की परिधियों में केंद्रित होता है। वस्तुतः परिवार नही होता तो गृहव्यवस्था ही नहीं होती। अतः परिवारिक श्रृंखलाओं के आधारभूत सिद्धांत पर ही गृहव्यवस्था निर्धारित होता है।

वैदिक साहित्य में महिलाओं के आय स्त्रोत का वर्णन भी मिलता है। उस समय आय की स्थितियों का आकलन किया जाता रहा हैं भूमि आय संसाधन का श्रोत माना जाता रहा है। भूमि के उत्पादित वस्तुओं का वितरण इसी आय में सम्मिलित था। महिलाएँ गृहव्यवस्था के अंतर्गत समय श्रृंखलाओं और भार्यादा में बंधी थी। आय के श्रोतों का आधार यहाँ पर उच्च कोटि, मध्यकोटि, निम्नकोटि का आधार भी माना जाता रहा है। उच्चकोटि की महिलाओं की केशसिखा महिलाओं के सौंदर्य प्रसाधनों का ख्याल रखती थी। तरह–तरह का लेप बनाकर महिलायें धन प्राप्त करती थी। प्रायः उस समय उच्चकोटि में यह सीमित था। कालान्तर वर्णव्यवस्था आय को प्रभावित किया पर आय उस समय समाजवादी दृष्टिकोण में बदल गया।

निम्न कोटि की महिलाएं अपने गृहव्यवस्था को अनुकूल बनाने के लिए, साथ ही परिवार के स्तर को सुधारने के लिए दूसरे जगहों पर कार्य करने लगी जो आय श्रोत का आधार तो था ही इन महिलाओं का

सामाजीकरण भी होता रहा। ये महिलाएँ शिक्षित भी होती थी। कुटीर उद्योगों के वितरण और प्रभाव भी महिलाओं को धनव्यवस्थापन, समय व्यवस्थापन की विधियों को भलि–भाँति समझा। तद्अनुसार कार्य सिद्धि के लिए ये महिलाये घर–घर जाती थी और नयी कलाओं को सीखकर धन उपार्जन करती थी।

पर्दा प्रथा इनके आय को प्रभावित किया फिर भी सर्वोच्च आय का श्रोत महिलाएं ही थी। धरेलु कार्यों के लिए इनहें पारिश्रमिक भी मिलता रहा।

सामन्ती वर्ग जहाँ धन की कमी नही थी। महिलाएँ मनोरंजन तथा अन्य उपकरणों के सहारे विनोद भी करती थीं साथ–साथ विनोद कराने वाली महिलाओं को अर्थ पुरस्कार भी देती थी। यह सिलसिला आज भी जारी है। अधिकांश व्यक्ति यह विश्वास करते हैं कि प्रबन्धमें सबसे महत्वपूर्ण कार्य और कठिन कार्य सही समय पर सही निर्णय लेना होता है। अधिकांश गृह प्रबन्ध में विचार के संदर्भ में यह मानते हैं कि वास्तविक प्रबंधकीय निर्णय सचेत स्तर पर लिये जाते है। समय व्यवस्थापन गृह–प्रबन्ध दोनो का समन्वय गृह कार्यों को परिलक्षित करता है।

वस्तुतः परिवार के संगठनात्मक ढाचा के आधार पर ही गृहव्यवस्था कायम हो पायी है।ऐतिहासिक आधार पर भी परिवार के प्रकार एवं दृष्टिकोण में बदलाव आया। आदिम परिवार में पितृत्व के बारे में अज्ञान, नातेदारी संबंधों का प्रभुत्व वर्तमान के समान शिक्षा का अभाव था। ईसा के 1,000 वर्ष पूर्व से 3,000 वर्ष पूर्व तक परिवार की श्रेणी में केन्द्रित था। वस्तुतः इन परिवारों में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। संपत्ति पर महिलाओं की अधिकार की मान्यता थी एवं उत्तराधिकार के रूप में मान्यता व्याप्त थी। मध्यकाल में इसाई, चर्च, रोम चर्च बन गया था इस समय के परिवारों में विवाह संस्कार भी बन गया था एवं तलाक नियम विरूद्ध हो गया था। पितृसत्ता को प्रोत्साहित किया जाने लगा। उस समय की गृहव्यवस्था, समय व्यवस्थापन पर आधारित था।

इसी प्रकार आधुनिक परिवारों की दृष्टि हमारे संगठन में आया। वस्तुतः औधोगिकरण, नगरीकरण, संदेशवाहन, यातायात वाहन की प्रधानता बन गयी। धीरे–धीरे परिवार श्रृंखलाओं का विमुखीकरण प्रारम्भ हो गया। इसी समय परिवार की आधुनिक दृष्टि का मूल्यांकन शुरू हो गया। परिवार में बच्चों का पालन पोषण सदस्यों की माँग तथा पारिवारिक दृष्टि एवं समय व्यवस्थापन पर केन्द्रित होता गया।

तत्पश्चात् अध्ययन की श्रृंखलाओं में पश्चिमी संस्कृति के परिवार पूर्वी संस्कृति के परिवारों की दृष्टि भी सामने आयीं। धर्म के आधार पर परिवार की श्रृंखलाओं का आधार बना। यह आधार भी गृहव्यवस्था और समय व्यवस्थापन की श्रृंखलाओं पर ही आधारित होता था। हिन्दु परिवार, मुस्लिम परिवार ईसाइ परिवार आदि परिवारों के संस्कार और गृहव्यवस्थापन का आयाम का संस्कार पर ही निर्भर करता है।

महिलाओं की आर्थिक भूमिका में काफी परिवर्तन हो रहा हैं अब गृहकार्य के अतिरिक्त आय उपार्जन की मुड बन गयी है। महिलाओं की पुरूषों पर आर्थिक निर्भरता कम हो गयी है और इनकी आर्थिक स्वतंत्रता भी बढ़ती जा रही है। यही आर्थिक आधार परिवार की व्यवस्था का आधार है।

यह भी स्पष्ट होता है कि शहर में धरेलू कार्य बहुत हल्के फुल्के हो गये है। अब महिलाओं को फुर्सत का अधिक समय भी मिलने लगा है। साथ ही संतानों की संख्या भी कम होती जा रही है। गृहिणी के कार्यों का विकेन्द्रीकरण भी शुरू हो गया है। पति और पत्नी का सह–सम्बन्ध भी बनता जा रहा है तथा तलाक की संख्याओं का आधार भी बढ़ता जा रहा है। गृहव्यस्थापन और गृहव्यवस्था की दूरियों के स्थालाकृतियों का अन्तर भी स्पष्ट होता जा रहा है। इस प्रकार गृहव्यवस्था धर्म पर भी आधारित हो मान्यताएँ प्राप्त करने लगा। क्योंकि नारी धर्म में परिवार और परिवार के कुशलता के प्रति महिलायें आस्थावान होती है।

यह भी माना जा रहा है कि व्यवस्था सार्वभौमिक है। प्रत्येक धरों में यह संघम्न की जाती है। वैदिक साहित्य में समय व्यवस्थापन कार्य रूप में जरूर था पर व्यवस्थित नही था। गृहव्यवस्था के भिन्न आयामों को गृहिणी ही करती थी। यह दृष्टि बहुयामी आधारों पर ही विकसित था। वस्तुतः समय व्यवस्थापन प्राचीन व्यवस्था में उदय लिया जब मुनष्य के पास घड़ी नही थी उस समय भी ऊँचाई और नदी, झील की छालया में सूर्य की किरणों का व्यापक प्रभाव ही दिखाई पड़ता था। इसे ही समय व्यवस्थापन का आधार माना जाता था। उस समय अल्प मात्रा में आवश्यकता की पूर्ति होती थी। दिन–रात के अंतराल में कार्य की अवधि बनती और बिगड़ती थी। परिवार को सीमित साधनों के लिए संघर्ष करना पड़ता था। प्राचीन गृहव्यवस्था में पारिवारिक श्रृंखलाओं का उद्‌भव संयुक्त परिवार के रूप में था। प्राचीन व्यवस्था में कार्यों का बंटवारा भी सीमिति थी। कार्यों का मूल्यांकन सदस्यों द्वारा होता था।

नये संसाधनों और पुराने संसाधनों के अंतराल में गृहव्यवस्था और समय व्यवस्थापन में सरलीकरण का उदगम हुआ। कार्य सरलीकरण के प्रारूप से इनका आंतरिक सह संबंध स्थापित किया गया। सरलीकरण के विकास एवं गृहव्यवस्था एवं समय व्यवस्थापन के प्रारूप का अध्ययन भी अनिवार्य है। समय व्यस्थापन की क्रियाएँ एक तरफ महिलाओं को शांति प्रदान करती थी तो दूसरी तरफ ये महिलायें किंगकर्त्तव्य विमूढ़ भी होती गई। कार्य की सक्रियता का प्रभाव ऊर्जा एवं शक्ति के कारण होता हैं पर इससे अधिक प्रभाव महिलाओं के कार्य क्षमता को प्रभावित करता है। महिलाओं की सरलीकरण की विशेषता बौद्धिक साहित्य में अंकित है।

महिलाएं अपने कार्यों को रूचिकर बनाने के लिए लोकगीत के माध्यम से किसी कार्य को सरल और मधुर भी बनाती थी। यह भी स्पष्ट है कि जल संसाधनों के लिए महिलाएँ तालाब, पोखर, कुआँ आदि का सहारा लेती थी और समूह जन कार्यों का सम्पादन भी करती थी। गृहकार्य को सम्पादित करने के लिए समय सारिणी का उपयोग भी करती रही है। आटा पीसना, केश श्रृंगार, सौंदर्य प्रसाधन सामग्री, पोषण सम्बन्धी ज्ञान, शिशुपालन एवं महिलाओं का विशिष्ट शिल्प, संगीत और खेलों के माध्यम से होता था।

प्राचीन काल की महिलायें चारावाह योजनाएँ भी बनाती रही है। आज की परिस्थितियों का आकलन करते है तो महिलायें कार्य के बोझ से तनाव में होती है। तरह–तरह की बीमारियों का शिकार भी हो जाती है लेकिन पूर्व के व्यवस्था में बीमारियों पर काबू पाने के लिए घरेलू इलाज भी संभव था। बहुत हद तक परिस्थितियों की अनुकूलता भी थी। गृहव्यवस्थापन पर्यावरण और परिस्थिति के अनुसार होता था। यह भी स्पष्ट है कि लंबी होने वाली रातों में ये महिलायें एकांकी, नाटक एवं कहानियों का लाभ प्राप्त करती थी। इस प्रकार अशिक्षित महिलाओं को अनौपचारिक शिक्षा मिल जाती थी। तरह–तरह के शिल्प दस्तकारी कार्य भी करते रहे

है जिसके लिए इन्हे पारिश्रमिक भी प्राप्त होता था, जो किसी भी कार्यस्थलों की परिभाषा एवं आधार पर केन्द्रित नहीं किया जाता था। बरन विकास की दशाओं पर ही निर्भर करता था। यह विकास कालान्तर हक था परंतु पूर्वानुमान ही क्रियाशीलता प्रदान करता था।

गृह–प्रबन्ध प्राचीन व्यवस्था का आज भी शाश्वत रूप यहाँ केन्द्रित है। इस प्रकार जन आकांक्षाओं की आधार शिलाएँ दोनो रूपों में पाया जाता रहा है। शनैः शनैः विकास की गतिविधियों को नयी प्रणाली और उसके कार्यस्थलों के रूप की विभाजन भी होना अनिवार्य है। इस प्रकार संपूर्ण विकास के उपायों का आधार मानती थी। जीवन चक्र के काल में गृहिणी का लगने वाला समय बहाव निम्न चित्र में दर्शाया गया है यह मुख्य बात ध्यान रखने की है। समय की दैनिक पूर्ति की सीमा 24 घण्टे ही होती है। मानक समय भी गृहव्यवस्था का अहम् रूप था जिसे आज भी स्वीकार करते है। इस प्रकार गृहणियाँ अपने–अपने परिवार और सदस्यों के बीच कार्य सिद्ध भी करती रही है। गृहिणियों के अनुभव पर आधारित कार्य किये जाते रहे है। जैसे–जैसे गृहिणियों में अनुभव का विकास हुआ इनकी कार्यशैली और कार्यप्रणाली बदलती रही है। इस प्रकार संपूर्ण कार्य की स्थितियों पर एक नजर रखने की आवश्यकता भी पड़ती है। कभी–कभी स्थितियों का आकलन व्यवहाँ रिकता के आधार पर भी निर्भर करता है। ठीक इसी समय समयव्यवस्थापन का आधार बना होगा इसलिए स्पष्ट कहा गया है कि गृहव्यवस्था अनुभव के आधार पर भी केन्द्रित और विकेन्द्रित होता जा रहा है। कार्य करने की कलाएँ और अनुभव भी समन्वय स्थापन को निर्धारित करता है। इस प्रकार परिस्थितियों पर बदलता स्वरूप भी नजर आता है।

वैश्वीकरण की सीमाएँ असीमित होती जा रही है क्योंकि व्यवस्था एव व्यवस्थापन का प्रारूप बदलता जा रहा है इस प्रकार कार्य का सरलीकरण भी वैश्वीकरण की सीमाएँ निर्धारित करता है। इस प्रकार कार्यों के प्रारूपों में निम्न प्रकार की वृत्तियाँ केन्द्र प्रसारी प्रारूपों में विकसित होता है। कार्यो की शतिशीलता भी वैश्वीकरण की वृत्तियों एवं लक्ष्यों पर प्रभाव है यही कारण है कि आज के वैश्वीकरण की दौड़ में कार्यो की महिलाओं का महाजाल बनता जा रहा है। भिन्न–भिन्न प्रकार की वृतियाँ एवं अभिवृत्तियाँ व्यक्ति विशेष को प्रभावित करती है। यह प्रारूपों में नही पाया जाता है। वस्तुतः वैश्वीकरण में नाकारात्म सोच विकसित होता जा रहा है। इसके पीछे कारण है कि भौतिकतवादी चिन्तन कार्यो का केन्द्र प्रसारी प्रारूपों में बदलता है।

संदर्भ सूची

[1] यादव, सूर्यभान – ''भारतीय समाज : संरचना और परिवर्तन'' वंदना पब्लिकेशन्स दिल्ली, 2012, 102.

[2] बॉटमोर टीबी. ''समाजशास्त्र'', सरस्वती कामप्लेक्स, दिल्ली, 2004, 32.

[3] सिंगर मिल्टन – ''स्ट्रक्चर एण्ड चेन्ज इन इण्डिया सोसायटी'' चिकागों एल्डाइन पब्लिकशन, 196,92.

[4] टायलर, एटवर्ड–''भारतीय समाजःएक परिचय'' यूनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर, 2008, 19.

[5] डा. कर्वे इरावती – ''किनशिप आर्गोनाइजेशन इन इण्डिया'' पुने डिकॉन कॉलेज मोनोग्राफ, 1953,64.